International Journal of Education and Science Research Review
E-ISSN 2348-6457
Volume-6, Issue-6 Nov-Dec- 2019
P-ISSN 2349-1817
www.ijesrr.org
Email- editor@ijesrr.org

हिन्दी पत्रकारिता के परिप्रेक्ष्य में भारतीय पत्रकारिता के इतिहास का विश्लेषण

डॉ अरविंदकुमार दीक्षित
प्राचार्य
श्री रामनारायण दीक्षित स्नातकोत्तर महाविद्यालय श्री विजयनगर
जिला श्रीगंगानगर (राजस्थान)

सार–
हिन्दी पत्रकारिता का अपना एक चूनोतीपूर्ण व महत्वपूर्ण दौर रहा है। हिन्दी पत्रकारिता का उद्भव उस काल में हुआ जिस काल में भारत गुलामी से मुक्ती की जंग लड़ रहा था। जिसके चलते हिन्दी पत्रकारिता को कई चुनौतियों का सामना करना पड़ा। इस शोध पेपर में भारतीय पत्रकारिता के इतिहास की विस्तृत जानकारी दी गयी है, जिसे हिन्दी पत्रकारिता के विशेष सन्दर्भ में समझने की कोशिश की गयी है।

प्रस्तावना–

भारतीय पत्रकारिता का इतिहास–
पहला दैनिक पत्र लंदन से 11 मार्च 1702 को प्रकाशित हुआ। जिसका नाम डेली करेंट था। डेली करेंट के 78 साल के बाद भारत में कोलकाता से कैलकेटा पब्लिक एडवरटाइजर नाम का पहला पत्र प्रकाशित हुआ। इसी के बाद कोलकाता से 1785 में बंगाल जर्नल और 1791 में इंडियन वर्ल्ड का प्रकाशन हुआ। राजा राममोहनराय के प्रयास से 1821 में संवाद कौमुदी तथा मिरातुल–अखबार भी कोलकाता से ही शुरू हुए। वैसे भारत में छापाखाना स्थापित करने का श्रेय पुर्तगालियों को है। भारत में पुर्तगाली मिशनरियों ने 1550 में यूरोप से तीन प्रेस मंगवाए। पहला प्रेस गोवा में स्थापित किया गया और 1557 में मलयालम में ईसाई धर्म के प्रचार के लिए यहां से एक पुस्तक प्रकाशित की गई। दूसरा प्रेस तमिलनाडु में 1558 और तीसरा मालाबार में 1602 में स्थापित किया गया लेकिन प्रेस लगाने के बावजूद किसी पुर्तगाली ने समाचार पत्र का प्रकाशन नहीं किया।

वस्तुतः उनका मुख्य उद्देश्य अपने धर्म का प्रचार करना था। 1696 में प्रकाशित फ्रांसिस डी सोजाने की पुस्तक यीशु द्वारा पूर्व की खोज से यह बात प्रमाणित होती है। जर्मनी के गुटेनबर्ग ने भी धार्मिक भावना से प्रेरित होकर ही टाइप के जरिए छपाई का काम शुरू किया था और बाइबिल छापी थी। हालांकि भारत में प्रेस स्थापित करने का श्रेय पुर्तगालियों को जाता है किंतु पत्रकारिता की शुरूआत करने का श्रेय अंग्रेजों को है। पुर्तगाली, डच, फ्रांसीसी और अंग्रेज सभी भारत में व्यापार करने आए थे। उनमें वर्चस्व की लड़ाई भी चलती थी और इस लड़ाई में अन्ततः अंग्रेज विजयी हुए। 1674 में हेनरी मिल्स एक प्रेस, टाइप और कागज लेकर भारत आए। लेकिन उसका उपयोग नहीं किया जा सका। अग्रेजों के प्रयासों से 1779 में कोलकाता में पहली सरकारी प्रेस स्थापित की गई जिसके प्रबंधक चार्ल्स विलकिंस थे, वे टाइप भी बनाना जानते थे। उन्होंने पंचानन कर्मकार नामक एक भारतीय की मद्द से बांग्ला लिपि के टाइप तैयार करवाए। यह प्रेस श्रीरामपुर में

लगाई गई थी।

कृष्ण बिहारी मिश्र के अनुसार, पहला प्रेस स्थापित करने का श्रेय श्रीरामपुर बंगाल के बैपटिस्ट मिशन के प्रचारक कैरे को जाता है। 1800 में वार्ड कैरे और मार्शमैन ने कोलकाता से थोड़ी दूर श्रीरामपुर में डैनिश मिशन की स्थापना की। कैरे ने पंचानन कर्मकार और मनोहर की मदद से देवनागरी लिपि की ढलाई की और प्रेस खोला। श्रीरामपुर से ही दो पत्र प्रकाशित हुए। समाचार दर्पण और दिग्दर्शन।

हिंदी पत्रकारिता की शुरूआत की दिशा में बैपटिस्ट मिशनरियों का यह एक अलग कदम था। उन्होंने सर्वप्रथम बांग्ला भाषा में पुस्तक प्रकाशित करने के उद्देश्य से टाइप तैयार करवाए थे लेकिन सही मायने में डच मूल के विलियम बोल्ट्स ने भारतीय पत्रकारिता की शुरूआत की। भारत की ईस्ट इंडिया कंपनी के अधिकारियों से किसी बात पर से उनका मतभेद हो गया। इस पर उन्होंने कंपनी के कर्मचारियों के विरोध में कंसीडरेशंस आन इंडियन अफेयर्स नाम से दो भागों में एक पुस्तक प्रकाशित की थी। उन्होंने सन् 1768 में कौंसिल के फाटक पर एक नोटिस चिपकाया था जिसमें लिखा था–सर्वसाधारण को मैं यह बताना चाहता हूं कि हस्तलेख में मेरे पास सबको बताने के लिए बहुत सी बातें हैं जिनका यहां के प्रत्येक मनुष्य से गहरा संबंध है। जिसमें जानने की उत्सुकता हो वह बोल्ट्स के घर आकर उसे पढ़ सकता है।' या नकल कर सकता है।

डा. रामचें तिवारी के अनुसार विलियम बोल्ट्स ने यह नोटिस सितंबर 1768 में चिपकाया था। इससे नाराज होकर लिस्बन निवासी बोल्ट्स को अंग्रेजों ने यूरोप वापस भेज दिया था क्योंकि अंग्रेज अधिकारी नहीं चाहते थे कि अंग्रेजों के कुकृत्यों के बारे में आम जनता को कुछ पता चल सके। इस तरह अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के दमन की शुरूआत भारतीय पत्रकारिता के जन्म से ही हो गई थी। बोल्ट्स ने अपने नोटिस में इस बात का उल्लेख किया था कि वह अखबार निकालने में कोलकाता निवासी उस व्यक्ति की मद्द कर सकता है और प्रेस भी उपलब्ध करा सकता है, जो अखबार निकालने का इच्छुक हो। लेकिन इस बात का कोई प्रमाण नहीं मिलता कि बोल्टास की मद्द से किसी ने अखबार निकाला हो।

पहला भारतीय पत्र जेम्स आगस्टन हिकी नामक एक अंग्रेज ने प्रकाशित किया था। हिकीज बंगाल गजट या कैलकटा जनरल एडवरटाइजर नामक यह पत्र 29 जनवरी 1780 को प्रकाशित हुआ। यह पत्र 2 पृष्ठों का था और 12 इंच लंबा और 8 इंच चौड़ा था। तीन कालमों में प्रकाशित इस पत्र में अंग्रेज अधिकारियों के भ्रष्टाचार, ईस्ट इंडिया कंपनी के कारोबार आदि के बारे में विवरण दिए गए थे। हिकी ने तत्कालीन गर्वनर वारेन हेस्टिंग को भी नहीं छोड़ा, जिस कारण हिकी को जेल भेज दिया गया। हिकी गजट के बाद जो पत्र प्रकाशित हुए उनमें इंडिया गजट नवंबर 1780, कैलकेटा गजट फरवरी 1784, ओरिएंटल मैग्जीन 1785 और मासिक पत्र कैलकटा एम्यूजमेंट 1785 प्रमुख हैं।

सन् 1791 मे विलियम हम्फ्रीज नामक अमरिकी ने इंडियन वर्ल्ड का प्रकाशन प्रारंभ किया, वे बंगाल जर्नल का

भी संपादन कर रहे थे। हम्फ्रीज के संपादन में 1795 में मोस से इंडियन हेरेल्ड निकला और 1818 में जेम्स सिल्क बकिंघम के संपादन में कलकत्ता जर्नल नामक अर्धसाप्ताहिक पत्र का प्रकाशन शुरू हुआ।

अठारहवीं सदी के अंत में कुछ और पत्र प्रकाशित हुए जिन्होने भारतीय पत्रकारिता के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया जैसे मोस कूरियर 23 अक्तूबर 1785, मोस गजट जनवरी 1795, इंडिया हेरेल्ड 2 अप्रैल 1795, बांबे हेरेल्ड 1789, बांबे कूरियर 1790, बांबे गजट 1791। बांबे गजट और बांबे हेराल्ड 1793 में मिलकर एक हो गए। मोस कूरियर सरकार के नेतृत्व में निकलता था जबकि इंडियन हेरेल्ड बिना लाइसेंस के निकलता था। सरकार ने इस पर शासन और प्रिंस ऑफ वेल्स के विषय में आपत्तिजनक लेख प्रकाशित करने का आरोप लगाकर इसके संपादक हम्फ्रीज को वापस इंग्लैंड भेज दिया। यहां पर यह ध्यान देने योग्य है कि भारतीय पत्रकारिता के उदय के साथ उसके इतिहास में दो महत्वपूर्ण चीजें जुड़ गई। पहला सरकार और सरकारी कर्मचारियों के भ्रष्टाचार की आलोचना करने वाले निर्भीक और तेजस्वी पत्रों का दमन और दूसरा संपादकों का उत्पीड़न। फिर भी इन विषम परिस्थितियों के बावजूद पत्र निकलते रहे और भारतीय पत्रकारिता विकसित होती गई।

बंगभूमि और हिंदी पत्रकारिता–

हिंदी का पहला पत्र उदन्त मार्तन्ड कोलकाता से ही प्रकाशित हुआ। उसके प्रकाशक कानपुर निवासी पं जुगल किशोर कोलकाता के न्यायालय में क्लर्क थे जो बाद में वकील हो गए थे। साप्ताहिक पत्र निकालने के लिए उन्होंने लाइसेंस हेतु भारत सरकार में दरख्वास्त दी थी। 16 फरवरी 1826 को सरकार ने उन्हें पत्र प्रकाशित करने की अनुमति दे दी। इसके बाद 37 नंबर आमड़ातला गली, कोल्हूटोला से 30 मई 1826 को पं जुगल किशोर ने उदन्त मार्तन्ड नामक पहला पत्र प्रकाशित किया। मगर आर्थिक दबावों के कारण इस पत्र को जल्द ही बंद करना पड़ा। इसका आखिरी अंक 4 दिसंबर 1827 को निकला।

कोलकाता से ही बंगदूत का प्रकाशन 10 मई 1829 को हुआ। यह भी साप्ताहिक पत्र था और हिंदू हेरेल्ड प्रेस से निकलता था। इसके पहले संपादक नील रतन हालदार थे। यह प्रति रविवार प्रकाशित होता था। इस पत्र से राजा राममोहनराय भी जुड़े थे यह बांग्ला, अंग्रेजी, फारसी और हिंदी में प्रकाशित होता था। यह पत्र भी एक साल नहीं चल सका। समाचार दर्पण के 21 जून 1834 के अंक की एक विज्ञप्ति में अंग्रेजी और हिंदुस्तानी में प्रकाशित होने वाले प्रजामित्र की सूचना तो मिलती है पर इसके बारे में कोई और जानकारी नहीं है।

उत्तर प्रदेश से प्रकाशित होने वाला पहला समाचार पत्र बनारस अखबार था। 1845 में यह अखबार बनारस से प्रकाशित होता था इसके संपादक गोविंद नारायण थे जो मराठी भाषी थे।
यह पत्र नाममात्र को हिंदी का पत्र था क्योंकि इसमें नाममात्र को ही हिंदी होती थी। इसमें अरबी, फारसी, शब्दों का भरमार थी जिनको समझना साधारण लोगों के लिए कठिन था। इसके मालिक राजा शिव प्रसाद सितारेहिंद थे जो हिंदुस्तानी के हिमायती थे। बनारस से ही सुधाकर का प्रकाशन 1850 में हुआ इसके प्रकाशक

तारा मोहन मैत्रेय थे। बनारस से प्रकाशित होने वाला यह अखबार बांग्ला और हिंदी में निकलता था। भाषा की दृष्टि से इसे उत्तर प्रदेश का पहला हिंदी का अखबार कहा जा सकता है। 1853 से यह केवल हिन्दी में ही प्रकाशित होने लगा। बुद्धि प्रकाश का प्रकाशन 1852 में हुआ। आगरा से निकलने वाले इस समाचार पत्र के संपादक लाला सदासुखलाल थे। पत्रकारिता और भाषा शैली की दृष्टि से इसका विशेष महत्व है। समाचार सुधावर्षण हिंदी का पहला दैनिक पत्र था। यह जून 1854 में कोलकाता से प्रकाशित हुआ इसके संपादक श्याम सुंदर सेन थे। इस पत्र के 1868 तक निकलने के प्रमाण हैं। यह 4 पन्नों का समाचार पत्र था जिसके 2 पृष्ठ हिंदी के और दो बांग्ला के थे।

इसी अवधि में कुछ और पत्र भी प्रकाशित हुए जिनमें मार्तड 1846, ज्ञानदीप 1846, मालवा अखबार 1848, जगदीपक भाष्कर 1849, सामदन्त मार्तंड 1853, सर्वहितकार 1855, प्रजाहितैषी 1855, और पयामे आजादी 1857 प्रमुख हैं। मार्तंड 11 जून 1846 को प्रकाशित हुआ। यह इंडियन सन प्रेस कोलकाता से प्रकाशित होता था। 10 पृष्ठों का यह पत्र अंग्रेजी, बांग्ला, फारसी और हिंदी में प्रकाशित होता था। ज्ञानदीप का प्रकाशन भी 1846 में हुआ पर इसका अधिक विवरण उपलब्ध नहीं है। मालवा अखबार 1848 मे इंदौर से हिंदी– उर्दू में निकला। हिंदी का पहला पत्र प्रकाशित करने वाले पं युगल किशार शुक्ल ने एक बार फिर पत्र निकालने का साहस किया और 1850 में कोलकाता से सामदन्त मार्तंड नामक पत्र निकाला। 1855 में शिवनारायण ने सर्वहितकारक का प्रकाशन शुरू किया।

19वीं सदी के पूवार्द्ध में निकलने वाले पत्रों पर एक नजर डालने के बाद यह स्पष्ट हो जाता है कि अब तक बंगाल से शुरु होकर हिंदी पत्रकारिता हिंदी प्रदेश में पहुंच गई थी और यहां इसने हिंदी पत्रकारिता के विकास के लिए एक ठोस जमीन तैयार की।

बीसवीं सदी की हिंदी पत्रकारिता और गांधी युग

बीसवीं सदी का प्रारंभ नए संकटों के बीच चेतना जाग्रत होने से हुआ। लार्ड कर्जन ने भारत में जातीय शक्ति और चेतना को खंडित करने के लिए दमन नीति का सहारा लिया। उसने 1905 में बंगाल का विभाजन कर दिया क्योंकि वह बंगालियों की संघशक्ति से आतंकित था। उसकी दमन नीति का जमकर विरोध हुआ और बंगाल के लोग एकजुट हो गए। राष्ट्रीय आंदोलन और गहरा हो गया। बंगाल भारतीय राजनीति का अग्रदूत हो गया था। सुरेंनाथ बनर्जी, विपिन चें पाल और रविंनाथ ठाकुर आदि लोग स्वतंत्रता आंदोलन के साथ साथ आध्यात्मिक पुर्नजागरण में भी सक्रिय हो गए।

बींसवी सदी के प्रथम चरण, 1900 से 1918 को हिंदी पत्रकारिता का तीसरा दौर भी माना जाता है। हिंदी साहित्य में इसे द्विवेदी युग के नाम से भी जाना जाता है कुछ लोग इसे तिलक युग भी कहते हैं। स्वराज्य हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है का नारा देने वाले बाल गंगाधर तिलक ने इस दौर में केसरी और मराठा नामक पत्र निकाले। केसरी का स्वर उग्र था और मराठा का नरम।

महावीर प्रसाद द्विवेदी ने हिंदी साहित्य और पत्रकारिता का नव निर्माण किया उन्होंने लगभग 20 सालों तक सरस्वती का संपादन किया। इस तरह तिलक और द्विवेदी जी के प्रभाव से हिंदी पत्रकारिता की दिशा में सकारात्मक बदलाव आए। इस दौर के हिंदी केसरी, भारतमित्र, नृसिंह, मारवाड़ी बंधु, अभ्युदय, कर्मयोगी, प्रताप, कर्मवीर आदि सभी पत्र देशप्रेम से प्रेरित पत्र थे।

हिदीं पत्रकारिता के विकास का अगला दौर 1920 से शुरु होता है। हिदीं पत्रकारिता के इतिहास में इसे गांधी युग कहा जाता है। गांधी जी कुशल पत्रकार भी थे। उन्होंने यंग इंडिया नवजीवन और हरिजन नामक पत्रों का संपादन किया। गांधी जी ने नवजीवन गुजराती में निकाला। हिंदी में इसका नाम हिंदी नवजीवन था। यह 1921 में प्रकाशित किया गया। हरिजन का नाम हिंदी में हरिजन सेवक था जो 1933 में निकला। इसी तरह यंग इंडिया का हिंदी संस्करण तरुण भारत नाम से हिंदी में निकला। इन पत्रों में विज्ञापन नहीं छपते थे। इन सभी पत्रों ने भारत में सामाजिक चेतना के साथ–साथ राजनीतिक चेतना के विकास में भी अहम भूमिका निभाई।

भारतीय राजनीति में गांधी जी के प्रवेश के साथ ही एक नये युग की शुरूआत हुई और इस प्रकार हिन्दी पत्रकारिता के क्षेत्र में भी एक नए विचार का प्रवेश हुआ। इस युग का कार्यकाल 1920 से 1947 तक का रहा। इसमें कोई दो मत नहीं कि गांधी जी ने अपनी गहरी समझ, दृढ़ इच्छा शक्ति, सत्याग्रह की अद्‌भुत क्षमता तथा निःस्वार्थ त्याग के द्वारा अपने युग का कुशल नेतृत्व करके हमारे स्वतंत्रता आंदोलन को एक व्यापक जनाधार दिया। इस कालखण्ड की पत्रकारिता में गांधी जी की अहिंसा का भी प्रमाण यहां देंगें। पत्रकारिता के उग्र तेवरों में सयंम का समावेश होने लगा।

5 सितम्बर, 1920 को बनारस से 'आज' का प्रकाशन शुरू हुआ, जिसे हिन्दी पत्रकारिता के इतिहास में एक युगान्तकारी घटना माना जाता है। पत्र के प्रथम अंक में लिखा गया कि– भारत के गौरव की बृद्धि और उसकी राजनैतिक उन्नति 'आज' का विशेष लक्ष्य होगा। आज के प्रकाशन के साथ ही हिन्दी पत्रकारिता में दैनिक पत्रों के प्रकाशन का एक नया युग शुरू हुआ। इसी क्रम में गांधीवादी आदर्शों की स्थापना हेतु कानपुर से 'वर्तमान' निकलने लगा। जिसके मुख पृष्ठ पर 'वन्दे मातरम्' शब्द अंकित रहता था। 23, नवम्बर 1920 से प्रताप का भी दैनिक संस्करण निकलने लगा। इस समय के अधिकांश समाचार पत्रों ने देश को तथा युवकों को असहयोग में शिरकत करने के लिए आमंत्रित किया।

बंगाल विभाजन और जलियांवाला बाग जनसंहार के कारण हिन्दी पत्रकारिता अत्यधिक उग्र हो गई थी किन्तु उन पर बापू के विचारों का इतना व्यापक प्रभाव था कि क्रांतिकारी पत्रों तक ने अहिंसा के प्रति अपनी श्रद्धा कायम रखी। प्रताप जैसे उग्र समाचार पत्र ने सितम्बर 1921 के एक अंक में लिखा कि 'हमारे सिरों पर प्रहार होते हों तो हों। बिजलियां गिरती हों तो गिरें, परन्तु हमारे व्यवहार में न गरमी आए और न कोई शिथिलता ही। हम डटे रहें वहीं पर, जहां पर हम डटे हुए हैं। हमारी दृष्टि रहे उसी लक्ष्य पर जिस पर वह

लगी हुई है। प्रहारों की मार से इनमें कोई अंतर न पड़े और अन्त में प्रहारों के करने वाले हाथ में शिथिलता आयेगी और उसके साथ ही निश्चित रूप से आयेगी हमारी अंतिम विजय की सूचना।'

इस दौरान जहां एक ओर समाचार पत्रों का स्वरूप गांधी जी की अहिंसा से मेल खाता था वहीं दूसरी ओर उनका स्वर क्रांतिकारी था। पं0 सुन्दर लाल, गणेश शंकर विद्यार्थी, माखनलाल चतुर्वेदी, बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' जैसे सम्पादकों ने क्रान्तिकारी भावनाओं को उद्वेलित करने वाली कवितायें लिखीं। इस समय 'देश भक्त', 'हम क्रान्ति करेंगे', 'जीवन संग्राम', 'घबराते क्यों हैं', 'विजय', 'मां' जैसे अनेक क्रान्तिकारी शीर्षकों से लेख, सम्पादकीय और कवितायें लिखी गयीं। क्राान्तिकारी गतिविधियों और क्रांतिकारियों के जीवन आदि पर लेख आदि प्रकाशित हुए। 'स्वदेश' का विजय अंक, 'चांद' का फांसी अंक 'प्रभा' का झण्डा सत्याग्रह अंक ऐतिहासिक महत्व के हैं। 20वीं सदी के प्रारम्भ में जब समाचार पत्रों की संख्या कुछ अधिक होने लगी और सरकारी प्रतिबंध कड़े होने लगे, तब मिलकर मुकाबला करने के लिए सम्पादकों ने संगठित होने की जरूरत महसूस की। हालांकि इस उद्देश्य से पत्रकारों का पहला संगठन सन् 1894 में 'हिन्दी उद्धरिणी प्रतिनिधि सभा' के नाम से बना था, किन्तु इसका सही रूप 1915 में जब आया, जब प्रेस एसोसिएशन ऑफ इंडिया का गठन हुआ। इसके बाद से अनेक संगठन बने तथा सम्पादक सम्मेलनों के भी आयोजन किए जाने लगे। इसका महत्वपूर्ण प्रभाव यह हुआ कि पत्रकार संगठनों के गठन के बाद उनमें एकजुट होकर सरकार से सीधी टक्कर लेने की क्षमता पैदा हुई और इस प्रकार पत्र–पत्रिकाओं का स्वर और अधिक आन्दोलनात्मक हो सका और इससे हिन्दी पत्रकारिता का स्तर ऊँचा उठा तथा उनकी स्वतंत्रता काफी कुछ सीमा तक अपेक्षाकृत सुनिश्चित हुई। निश्चित रूप से इससे उपनिवेशवादी ताकत पर एक अंकुश लगा।

भारत छोड़ो आन्दोलन के समय भी हिन्दी पत्रकारिता ने हालांकि अपने दायित्व को उठाया, किन्तु जबर्दस्त सरकारी प्रतिबंधक नीति ने इसे दबोच लिया। यहां तक कि गांधी जी के पत्र 'हरिजन' की प्रतियां जब्त कर ली गयीं। 'आज', 'प्रताप' जैसे अनेक समाचारपत्रों को अपने प्रकाशन स्थगित करने पड़े। वर्षों तक हिन्दी पत्रकारिता हुकूमत की भारी जंजीरों में जकड़ी रही। फिर भी विश्वविद्यालयों, महाविद्यालयों की पत्रिकाओं के माध्यम से जनता और विशेषकर नवयुवकों और विद्यार्थियों को जागृत रखने का काम जारी रहा। लखनऊ विश्वविद्यालय की पत्रिका के सन् 1942 के अंक में सम्पादक लिखता है 'वह साहित्यिकार या कलाकार जो अन्याय के विरुद्ध नहीं उठ सकता, वह कला के नाम को दूषित करता है।'

स्वातंत्रयोत्तर हिंदी पत्रकारिता

1947 में स्वतंत्रता मिली और उसके साथ ही पत्रकारिता का नया संघर्षमय दौर शुरू हो गया। आजादी मिलने के बाद नई चुनौतियां सामने आईं जिनका सामना पत्रकारिता को भी करना पड़ा। स्वातंत्रयोत्तर भारत का नेहरु युग राष्ट्रीय–सामाजिक विकास के लिए नई जमीन तलाश रहा था। भारतीय संविधान ने सबको अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता प्रदान की, जिससे सूचना पाने और देने का अधिकार सबको मिल गया। इन परिस्थितियों में हिंदी पत्रकारिता का तेजी से विकास हुआ। हिंदी प्रदेशों में साक्षरता दर बढ़ी और इस वजह से समाचार पत्रों की

प्रसार संख्या भी बढ़ी। समाचार पत्र तकनीक की दृष्टि से भी उन्नत हुए और मुेण की स्थिति भी पहले अॅछी हुई। कुछ पूंजीपति पत्रकारिता के क्षेत्र में आगे आए। इससे हिंदी पत्रकारिता का विकास हुआ लेकिन धीरे–धीरे लोगों ने इसका गलत फायदा उठाया और भ्रष्टाचार बढ़ने लगा। इमरजेंसी के दौर में एक बार फिर अभियक्ति की स्वतंत्रता पर अंकुश लगा। 1977 में इमरजेंसी खत्म होते ही फिर से पूंजीपतियों व राजनीति का खेल शुरू हो गया। सनसनीखेज खबरों की वजह से विश्लेषणात्मक खबरें कम लिखी जाने लगी। आठवें दशक तक आते आते अफसर और मंत्रियों के बीच लेनदेन की खबरें आने लगी। संपादक भी अखबार मालिकों के नौकर बन गए, उनकी स्वायत्तता कम होती चली गई। पूंजीपतियों के नौकर बन गए। लेकिन इसी दौर में धर्मवीर भारती, मनोहर श्याम जोशी, रघुवीर सहाय, राजें माथुर, सुरेन्द्र प्रताप सिंह और कमलेश्वर जैसे संपादक भी आए जिन्होने पूंजीनियंत्रित समाचारपत्रों को विकृत होने से बचाया। उन्हें सत्ता का खिलौना नहीं बनने दिया।

निष्कर्ष–

आधुनिक पत्रकारिता का इतिहास अभी 400 वर्ष पुराना नहीं हुआ है, लेकिन पत्रकारिता ने विश्व के इतिहास को बदल डाला है। यह कथन अतिशयोक्ति लगता है लेकिन जरा भारत के स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास पर नजर डालिये तो पता लग जाएगा कि हमारी आजादी का हर बड़ा नायक किसी न किसी रूप में पत्रकार था। किसी ने सम्पादक के रूप मे तो किसी ने लेखक पत्रकार के रूप में अपनी कलम के जरिए आजादी की आवाज को बुलन्द किया। कहा गया है कि *जब तोप मुकाबिल हो तो अखबार निकालो*। भारत ही नहीं विश्व के कई अन्य देशों में भी आजादी की लड़ाई में पत्रकारिता की निर्णयकारी भूमिका रही है। समाचारों के संकलन तथा प्रसारण से शुरू हुई पत्रकारिता की कला समाज की वाणी तथा अभिव्यक्ति का प्रतीक बन कर आज नए जमाने के नए तेवरों की हमराह बन चुकी है। एक समय था जब मालिक लाखों का घाटा सह कर भी अखबार निकालते थे। सम्पादक को त्याग, तपस्या और संघर्ष के सम्बल पर जिन्दा रहना होता था। पत्रकारिता का मतलब ही समाज सेवा और देश सेवा होता था। लेकिन वक्त के साथ हर चीज बदलती चली गई। आज कम्प्यूटर क्रान्ति के फलस्वरूप समाचार पत्रों का पूरा कलेवर ही बदल गया है। निश्चित तौर पर वर्तमान दौर में पत्रकारिता पर बाजार हावी हो गया है। आज अखबार को जनता की आवाज के बजाय साबुन और तेल की तरह एक प्रोडक्ट मानने वालों की कमी नहीं है और एक तरह से बाजार खबरों पर सवार हो गया है। लेकिन इन प्रतिकूल स्थितियों के बाद भी यह उम्मीद खत्म नहीं हुई है कि पत्रकारिता अपने तेवर और अपनी ताकत बचा पाने में कामयाब रहेगी। सच लिखने का साहस, खबरों की तह तक जाने की दृष्टि और जन सरोकारों की अभिव्यक्ति एक बार फिर पत्रकारिता के आधार स्तम्भ बनेंगे। वर्तमान दौर में टैक्नोलॉजी का जिस तेजी से विकास हो रहा है, उसने अखबारों की दुनिया ही बदल दी है। एक दौर था जब हाथ से लिखे शब्दों के अखबार में छपने तक के बीच का समय कई घंटों का होता था। आज कुछ मिनटों में यह सारा काम हो जाता है। तकनीक का ही कमाल है कि अखबारों के नेट संस्करण आज आम हो गए हैं और यह भी माना जा रहा है कि पेपरलेस अखबारों का जमाना भी जल्द ही आने वाला है। यानी अखबार तो आप तक पहुचेगा लेकिन कागज पर छपा हुआ नहीं। आपके कम्प्यूटर या मोबाइल की स्क्रीन पर ही आपका अखबार आपके

सामने आ जाएगा। नए जमाने, नयी तकनीक और नए दौर में पत्रकारिता की चुनौतियां भी निश्चित रूप से नई होंगी, लेकिन पत्रकारिता की पहचान और कलम की ताकत तब भी कम नही होगी।

विश्व की पत्रकारिता में तीव्रता से हुये विकास के परिणामस्वरूप आज पूरा विश्व एक गांव के रूप में दृष्टिगत होता है। इसलिए ऐसे विषय को समझना व उसकी जानकारी रखना आवश्यक हो जाता है। इस शोध पेपर का उद्देश्य पत्रकारिता से विद्यार्थियों का परिचय कराना, उन्हें पत्रकारिता की बारीकियों तक ले जाने का प्रयास करना है। इसके अलावा पत्रकारिता के सभी पहलुओं पर प्रकाश डालते हुये इसके स्वरूप व आयामों को विद्यार्थियों के सामने रखना भी इस शोध का उद्देश्य है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची–

- आचार्य दाऊदयाल, भारत के स्वतंत्रता संग्राम में बीकानेर का योगदान, चेतना प्रकाशन, बीकानेर, 2017
- कुलश्रेष्ठ, डॉ. विजय, हिन्दी पत्रकारिता एवं सर्जनात्मक लेखन, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, 2007
- गुप्ता, शोभालाल, गांधी जी और राजस्थान, भीलवाड़ा 1969, राजस्थान राज्य गांधी स्मारक निधि, जयपुर, 2018
- चतुर्वेदी, जगदीश्वर, हिन्दी पत्रकारिता के इतिहास की भूमिका, अनामिका पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स, संस्करण–2017
- जैन, डॉ. रमेश कुमार, हिन्दी पत्रकारिता का आलोचनात्मक इतिहास, हंसा प्रकाशन, जयपुर, 2021
- जोशी, राजेन्द्र, उन्नसवीं शताब्दी का अजमेर, राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी, जयपुर, 1972
- ताराचंद, भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन का इतिहास खण्ड–1, नई दिल्ली, 1977
- देसाई, ए.आर., भारतीय राष्ट्रवाद की सामाजिक पृष्ठभूमि, मैकमिलन इण्डिया लि, नई दिल्ली, 1982
- पाण्डे, डॉ. पद्माकर, हिन्दी पत्रकारिता और राष्ट्रीय आन्दोलन, नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी, 1993